ऑडियो विडियो रिकोर्डिंग समय एवं विवरण पत्र

फोल्डर नं:- 02
ट्रैक नः- ZOOM0009
ट्रैक समयावधि:- 01 : 12 : 49
कलाकार का नाम:- सुभान खां
पिता का नाम:- खमे खां
सहायक कलाकार:-

पता:- गॉव- बड़नावा चारणान् तेह-पचपदर जिल-बाड़मेर
विषय:- कथा (ब्राह्मण की कथा)
विशेष विवरण:-
विडियो रिकोर्डिंग समय:-
दिनांक:- 10-07-21
स्थान:-

यह कथा न्याय पर आधारित है। इस कथा से यह मालूम होता है कि पहले के जमाने में लोग कितने बुद्धिमान होते थे और न्याय किस प्रकार से किया जाता था।

कथा की शुरुआत में एक गरीब ब्राह्मण की चार लड़किया होती है और अब वह बड़ी हो गई है लेकिन ब्राह्मण के पास विवाह करने के लिए एक रुपया भी नहीं है तो वह बहुत निर्धन है। तथा वह एक महाराज के पास जाता है और उससे कुछ रुपय माँगता है तो वह कहता है कि मैं तुम्हे रुपय तो उधार दे दूँगा लेकिन अगर बताए गए समय से एक मीनट भी ऊपर निकल गया तो मैं पैसे नहीं लूँगा और आप के शरीर का एक किलो मांस लूँगा। लेकिन ब्राह्मण को पैसे सख्त जरुरत होती है तो वह पैसा लेकर घर चला जाता है और अपनी लड़कियों का करवा देता है तथा कुछ दिन बाद वह इधर-उधर से रुपय लेकर उस महाराज के पास जाता है तब तक समय से एक पोर ऊपर निकल जाता है तो वह महाराज कहता है तुम निर्धारित समय से एक पैर बाद आए हो मैं आपके शरीर का किलो मांस लूँगा ब्राह्मण उसे बहुत तर्क देता है लेकिन वह नहीं मानता है। वे दोनों झगड़ ही रहे होती तभी उस गाँव का ठाकुर वहां आ जाता है तथा वह पूछता है तो ब्राह्मण उसे सारी बात है तो वह ठाकुर ब्राह्मण से कहता है पहले तुम मेरी घोड़ी को पानी पिलाकर ले आओ फिर मैं आपका न्याय कर दूँगा तथा ब्राह्मण घोड़ी को पानी पिलाने जाता है और पानी पिलाकर लगाम लगाने लगता है तो घोड़ी लगाम लगाने नहीं देती है तो वह घोड़ी को लाठी मारता है और घोड़ी मर जाती है और वह वापिस जाता है तो ठाकुर उसे पूछता है कि घोड़ी कहा है तो वह कहता है कि घोड़ी लगाम नहीं लगा रही थी और मैंने सिर्फ एक लाठी मारी और घोड़ी मर गई तो वह ठाकुर कहता कि तुमने मेरी एक लाख रुपय की घोड़ी मार दी है अब तुम्हे मुझे एक लाख रुपय देने पड़ेंगे नहीं तो मैं तुम्हे मार दूँगा

तथा वे तीनो न्याय करने दुसरे गाँव जाते है जहाँ एक व्यक्ति न्याय करता है। वे तीनो उसके घर जाते है तो वह व्यक्ति के घर कुंआ बन रहा होता है और वह स्वंय कुंए के अन्दर होता और उसके सात लड़के बाहर काम कर रहे होते है। ये तीनों कुंए के पास जाते है तो ब्राह्मण सोचता है कि मेरे ऊपर दो इल्जाम है मेरी मौत तो तय है तो वह आत्महत्या की सोच कुंए में कूद जाता है और वह उस न्याय करने वाले व्यक्ति के ऊपर जाकर गिरता है तो उसे तो कुछ भी नहीं होता है और वह व्यक्ति मर जाता है तो उस व्यक्ति के सातो लड़के भाग कर आते है और उसे बाहर निकालते है तथा ब्राह्मण को मारने लगते लेकिन महराज और ठाकुर कहते है कि पहले इससे हमारे पैसे दिला दो फिर इसे मार सकते हो। इसप्रकार जब वे न्याय करने के लिए तीसरे गाँव जाते है वे वहां पहुँचते है और पता चलता है कि उस आदमी की मृत्यु हो गई है और अर्थी चल रहा है तो वे दो तीन दिन वहां रुक जाते है और चौथे दिन उस व्यक्ती का सबसे छोटा लड़का न्याय के लिए तैयार होता है तथा वह न्याय सुनने बारह गाँव लोग इकट्ठे होते है और वह लड़का न्याय करता है तो सबसे पहले उस महराज को बुलाता है और बात पूछता है तो बताता है कि इस तरह से मुझसे पैसा लेगया और मैंने कहा था कि अगर समय पर नहीं पहुँचा तो मैं एक किलो मांस लुंगा और यह पूरा एक पोस बाद में आया तो मैं इसके शरीर से एक किलो मास लुंगा तो वह लड़का महराज से कहता है कि लो ये तलवार और किलो मांस लेलो लेकिन सिर्फ एक बार मारने दूँगा और अगर एक किलो से ज्यादा या थोड़ा भी कम कट गया तो मैं तुम्हे मार डालूंगा। महराज सोचता है कि एक झटके में बराबर एक किलो तो नहीं आ सकता है तो वह कहता है कि मेरा न्याय तो हो गया है।

और वह से दिए उधार पैसे ले लेता है। अब वह ठाकुर से पूछता है तो वह कहता है कि मैंने इसको अपनी घोड़ी को पानी पिलाने भेजा था और इसने उसे लाठी से मार डाला तो अब घोड़ी का जुर्माना भरना पड़ेगा तो वह न्याय करने वाला लड़का कहता है कि इसने आपकी घोड़ी के एक लाठी मारी थी और मैं आपसे कहता हूँ तुम मेरी इस घोड़ी के चार लाठी मार लो मर गई तो मेरी गई और आपकी घोड़ी के पैसे भी मैं दूंगा अगर नहीं मरी तो मैं आपको मार दूंगा। ठाकुर सोचता है कि चार लाठीसे घोड़ी नहीं मर सकती है और मेरी घोड़ी तो मौत आ गई थी। तथा वह कहता है कि मेरा भी न्याय हो गया है। अब उस लड़की पूछता है तो वे कहते है मेरे पिताजी कुंए के अन्दर काम कर रहे थे और यह आदमी उसके ऊपर कूद गया जिससे उसकी मौत हो गई अब हम बदला लेंगे इसको मारेंगे। तो लड़का कहता है कि यह आपके पीतजी के ऊपर कूदा था तो इसे कुंए में खड़ा करके तुम सातों इसके ऊपर कूद जाओ तथा वे सोचते है कि हम कुंए में कूदेंगे तो हम भी मर जाएंगे और पिताजी को तो मौत आ गई थी। तथा वे कहते है कि हमारा भी न्याय हो गया है। तो न्याय हो जाता है तालिय बजती है और वह ब्राह्मण अपने घर जाता है।